WWJMRD 2018; 4(2): 93-95
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
UGC Approved Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

विजय कुमारी
M.A हिन्दी, यूजीसी नैट
कुंगड़ भिवानी, भारत

Correspondence:
विजय कुमारी
M.A हिन्दी, यूजीसी नैट
कुंगड़ भिवानी, भारत

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना

विजय कुमारी

Abstract
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी प्राचीन भारतीय संस्कृति के पोषक हैं। उनका समग्र साहित्य उनकी इसी सांस्कृतिक चेतना का प्रस्फुटन है। जीवन में मान जीवन, मानव संस्कृति और मानव संस्कृति में भारतीय संस्कृति की विशिष्टता संपूर्ण मानव समुदाय एक मत स्वीकार करता है वह जाए तो द्विवेदी जी अपने गहन अध्ययन के फलस्वरूप ही भारतीय संस्कृति के अन्तस्तत्वों का अन्वेषण एवं विश्लेषण करनें में पूर्ण सफल हुए हैं, द्विवेदी जी के साहित्य का अधिकांश भाग सांस्कृतिक विचारधारा से अनुप्रणित है। डॉ0 सत्यसागर शम अपने एक लेख में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और भारतीय संस्कृति में लिखते हैं– द्विवेदी जी का साहित्य गुप्तकालीन, बौद्धकालीन, मध्यकालीन और आदिकाल की संस्कृति का संगम है। उसमे इस्लामी संस्कृति का आख्याय, बंधकाररूप भारतीय संस्कृति कवि और समीखक के रूप में भारतीय संस्कृति का पुनरूदारक एवं उन्नायक है। संस्कृति कौर कल के व्याख्यान स्वरूप में द्विवेदी जी का योगदान उल्लेखनीय है।.

Keywords: साहित्य, विचारधारा, विष्लेशण, संस्कृति, समुदा

Introduction
संस्कृति शब्द का अर्थः डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा है– संस्कृति शब्द भद्यसमय उपसर्ग के साथ संस्कृति की (ड) कृ (ण) धातु से बनता है जिसका मूमल अर्थ साफ यपरिष्कृत करना है। आज की हिन्दी में यह अंग्रेजी शब्द भद्यकल्चर का पयार्य माना जाता है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के एक लेख के आधार पर कचसंस्कृति मनुष्य के भूत, वर्तमान और भावी–जीवन का सर्वांगपूर्ण प्रकार है। हमारे जीवन का ढ़ंग हमारी संस्कृति है। संस्कृति हवा में नहीं रहती उसका मूर्तिमान रूप होता है। जीवन के नानाविध रूपों का समुदाय ही संस्कृति है।

साहित्य और संस्कृतिः
यहाँ साहित्य को संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग स्वीकार किया गया है। आचार्य द्विवेदी जी की सांस्कृतिक अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए उनके साहित्य संबंधी विचारों को समणना अधिक जरूरी है। द्विवेदी जी ने पुराने को नये सांचे में ढ़ालकर अतीत को वर्तमान में उतारने का श्लाघनय प्रयास किया है। उनकी दृष्टि में साहित्य का उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन या वाग्विलास न होकर मनुष्य का विकास करते हुए उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना ही है। वस्तुतः साहित्य का लक्ष्य मनुष्यता का विकास करना होता है। इस संबध में वे लिखते हैं कच्क्या मनुष्य जो कुछ करता है वही मनुष्यता है? नहीं, मनुष्य में आहार, निद्रा आदि अनेक बातें वैसा ही है जैसी पशु में हैं। जहॉ तक इन्द्रीय लोलुपता है, लोभ मोह की गुलामी है, छीना, झपटी और स्वार्थ परता है, वहॉ तक मनुष्य पशु ही है। ज बवह दूसरे के सुख दुःख में हर्ष विषाद का अनुभव करता है। त बवह मनुष्य होता है। इसको पशु धरातल से उपर उठाना है, यही मनुष्य की मनुष्यता है। इसी का सर्वोतम प्रकाश साहित्य में होता है। साहित्य इसीलिए कल्पना नहीं है, बल्कि दीर्घकालीन त्याग और तप से उपर्जित उसकी महती साधना है।

द्विवेदी जी के साहित्य में सांस्कृति विचार
द्विवेदी जी के सृजनात्मक साहित्य में उनकी समीक्षाओं के अलावा उपन्यासों एवं निबंध संग्रहों में भी सांस्कृतिक विचार में दिखने को मिल जाते हैं।

निबंध साहित्य में सांस्कृति विचार
कहा जाता है कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध संग्रहों में सांस्कृतिक संबंधों को वर्गीकृत रूप में अध्ययन परक बनाया गया है। निबंध संग्रहों में साहित्यिक निबंधों की संख्या अधिक न हीं है। सभ्यता एवं संस्कृति का परस्पर समन्वय स्थापित करते हुए उन्होंने भद्यविचार प्रवाहए में संग्रहित अपने प्रसिद्ध निबंध भद्यसाहित्य का मर्मए में खिा हैं– उससे उत्पादित सामग्री को सब तक पहुंचाकर सबके साथ मिलाकर भोगने में मानसिक औदार्य और बौद्धिक निर्लिमता आवश्यक है, वह इतनी आसानी से नहीं मिलती। द्विवेदी जी यहॉ पर यह कहना चाहते हैं िकवह उस वस्तु की खोच होनी चाहिए जो मनुष्य को छोटे प्रयोजनों में बांधने के बदले उसे प्रयोजनातीत सत्य की और उन्मुख करें। अपनी इस विचारधार की ही भांति उन्होंने उदारवादी साहित्य के संबंध में भी अपना दृष्टिकोण अपनाया है। उन्हांने भद्यविचार और वितर्कए के प्रथम संस्करण में एक स्थान पर लिख है कि च्कसाहित्य की सबसे बड़ी समस्या मानव जीवन है। कभी–कीी इस प्रकार की बात की जाती है मानों साहित्य की रचना दस अन्य भले कामों की अपेक्षा कुछ भिन्न वस्तु है। वस्तुतः अगर साहित्य की रचना कोई भला काम है तो दस अन्य भले कामो के समान ह उसका लक्ष्य भी मनुष्य जीवन को सुखी बनाना है। वह शास्त्र, वह रसग्रंथ, वह कला, वह नृत्य वह राजनीति, वह समान सुधार और पूजा पार्वण जंजाल

मात्र है। जिससे मनुष्य का भला न होता है। द्विवेदी जी के दृष्टि से साहित्य अन्य भौतिक प्रयत्नों से भिन्न एक सांस्कृति वस्तु है। जो परंपरा से चली आ रही साहित्यिक मान्यताओं को तोड़ देती है। भद्यनाखून क्यों बढ़ते हैंए शीर्षक निबंध में द्विवेदी जी नाखुन को मनुष्य की पाशविकता का प्रतीक मानते हैं वे मानव संस्कृति के उद्‌गम से लेकर आधुनिक गुण केबीच को अनेक स्थितियों एवं परिस्थितियों का तर्क संगत इतिहास प्रस्तत करते हैं और इसी माध्यम से बर्बर अवस्था लेकर आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों तक मनुष्य में होने वाले मानसिक परिवर्तनों को बड़ी कुशलता से चित्रित करते हैं। उनकी मान्यता है कि च्कमनुष्य ही शुभ सृष्टि का नियन्ता है। मनुष्य सब कुछ को अपने अनुकूल एवं करतलगत करने के लिए जूझने वाला और आश्चर्यजनक है। उनका निबंध भ्यभगवान महाकाल का कुंठ नृत्य, निबंध भारतीय स्वतंत्रता से संबंधित पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस निबंध में द्विवेदी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं अन्य देशभक्तों के अविस्मरणीय त्याग और बलिदान को मधुर स्मतियों में ताजगी प्रदान करते हुए तत्कालीन साहित्यिक एवं सांस्कृति पृष्ठभूमि का भावभूमि का भावपूर्ण चित्रण किया है। इसीलिए वे कहते हैं कि च्कइस विषाक्त वातावरण में हमें अपने पारस्परिक संस्कारों को परिवर्तित करना होगा। स्वार्थों के संघर्ष में दायित्व के निर्वाह के लिए स्वार्थ और परमार्थ के बच सामजस्य क खोज अनिवार्य आवश्यकता है। आधुनिक भारतीय संस्कृति को निर्मित करने वाली अनेक शक्तियों एवं ऐतिहासिक षम में घटित होने वाली उन घटनाओं का जिन्होंने विकास प्रकिया को प्रभावित किया है आगे द्विवेदी जी लिखते हैं कि उन सबके (भारत वर्ष में आई अनेक जातियां) सम्मिलित प्रयत्न से वह महिमाशालिनी संस्कृति उत्पन्न हुई जिसे आज हम भारतीय संस्कृति कहते हैं। वस्तुतः द्विवेदी जी के सम्र साहित्य में व्याप्त सांस्कृतिक चेतना अपने विरात्व एवं तेजस्विता को अक्षुण्ण बनाये रखती है। संस्कृति के नाम पर मानसिक जड़ता एवं रूढ परंपराओं का विरोध करते हुए उन्होंने भारतीय संस्कृति की दार्शनिक धारणाओं और समय समय पर परिवर्तित संस्कारों को आत्मसात करने वाली समन्वयवादी दृष्टि के पोषक रहे हैं तथा मानव मात्र के कल्याण एवं परस्पर प्रेम को प्रतिष्ठित करने के लिए सार्वभौम मानवीय मूल्यों की रचनाएं करते रहे हैं। समीक्षा साहित्य में सांस्कृतिक विचार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी साहित्य को सदा सांस्कृतिक भूमिका में रखकर देखने के पक्षपाती थे। वे भारतीय–अभारतीय, देशी–विदशी, आध्यात्मिक–भौतिक के अर्थ–भेद को अपने सांस्कृतिक चिंतन में विशेष स्थान नहीं देते। उनकी दृष्टि तो मानव की सर्वोन्मुखी उन्नति पर रही है। द्विवेदी जी ने प्राकृतन अध्ययन के और मनन के आधार पर भविष्य की निर्माण की धारणा के कारण नवीन को महत्व नहीं दिया, बल्कि सांस्कृतिक पुरानी संपदा के रूप मे सांस्कृतिक पहलू की ही मीमांसा करना उचित समझा है। द्विवेदी जी क प्राचीन संस्कृति के अध्ययन एवं मनन से उसके गुणों को स्वकार करे हुए उसके दोषों को त्याग दिया हे। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी संस्कृति को शाश्वत एवं एकदेशय न माने हुए उसे प्रगतिशील, परिवर्तनशील एवं परंपरा–नैरन्तर्य से सम्पृक्त मानते हैं। उनकी मान्यता है कि साहित्य ही संस्कृति का एक अंग है। इसलिए संस्कृति की ही भांति साहित्य भी परिवर्तनशील, प्रगतिशील और परंपरा नैरन्तर्य से युक्त है। इसी संदर्भ में इस कथन को भी देखें– मनुष्य की जवन–शकित बड़ी निमर्म है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति सिर्फ बात ही बात है। शुद्ध है केवल मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा। वह गंगा की अबाधित अनाहत धारा के समान सब कुछ हजम करने के बाद भी पवित्र ह आचार्य द्विवेदी जी ने लोकोन्मुखी संस्कृति से युक्त समीक्षाएँ लिखी हैं, चाहे सूर साहित्य हो, या नाथ संप्रदाय, मध्यकालीन धर्म सामधना या फिर कबीर पर हो। उनके साहित्य इतिहास के दर्शन की चर्चा करते हुए विद्यानों ने उसका एक नया नाम लोकोन्मुखी सांस्कृतिक सामाजिक नैरन्तर्यए चाहे वे भक्तिकाल पर विचार कर रहे हों या रीतिकाल पर या फिर आधुनिक काल कर रहे हों, उनकी सांस्कृति चिंतनधारा सदा प्रवहमान रहती है। सबसे तेजस्वी समीक्षा कृति भद्यहिन्द साहित्य की भूमिकाएं में मध्यकाल की रचनाओं, विशेष रूप से संत काव्य को भारतीय चिंतनधारा का स्वाभाविक विकास मानते हुए उन्होंने लिखा है–बौद्ध तत्ववाद जो निश्चय ही बौद्ध आचार्यो की चिंता की देन या मध्ययुग के हिन्दी साहित्य के उस अंग पर अपना निश्चिय पदचिन्ह छोड़ गया है जिसे संत साहित्य नाम दिया है...वे जो कहना चाहते हैं वह यह है कि बौद्ध धर्म क्रमशः लोक धर्म का रूप ग्रहण कर रहा था और उसका निश्चित चिह्न हम हिन्दी साहित्य में पाते हैं। द्विवेदी जी संस्कृति को मनुष्य की निरंतर विकासशील जययात्राएं मानते हैं। यही पशुता के उपर मनुष्यता की विजय है और वे इसे ही सामाजिक मंगल का विधान मानते हैं। वे भक्तिकाल की ही भांति रीतिकाल को भी तत्कालीन परिस्थितियों की देन मानते हैं। सहित्य–सहचर में एक स्थान पर वे लिखते हैं कि ...कवि है इस दुनिया का ही जीव। जिन वस्तुओं से अपना काव्य रचना है वह ही इस दुनियों की ह होती है। इस प्रकार यह कहा जाता है कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की लगभग सी समीक्षा कृतियों के मूल्यांकन का आधार प्राचीन भारतीय संस्कृति ही है। वे संस्कृति की अतल गहराइयों से इस खंच खींच कर प्रति पल नये युग के बहने वाले पवन में सांस लेने वाले थे वे पुराने और नये में सामजस्य करके नये मूल्य स्थापित करने में सिद्धहस्त थे।

उपन्यास सहित्य में सांस्कृतिक विचार

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की कालयुजी सृजन श्रृंखला में उनके चारों उपन्यासों की आधारशीला भारतीय सांस्कृतिक चेतना ही है। उन्हें वि.ानों ने सांस्कृतिक उपन्यासकार की प्रतिष्ठा भी दी है। सजग साहित्य होते हुए उन्होंने अपने उपन्यासों में भारत के अतीत सांस्कृतिक वैभव का चित्रण तोकिया ही है, साथ ही मानव समाज की अधुनातन समस्याओं के समाधान भी प्रस्तत किए हैं, एतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए इन उपन्यासों में आधुनिक जीवन की उलझी हुई समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने का श्लाघनय प्रयत्न किया है। इस संदर्भ में डॉ. प्रेमप्रकाश भट्‌ट के इस कथन पर विचार किया जा सकता है। उनके उपन्यासों में एक सुचिंतित छंद के आवरण में आधुनिक युग की विसंगत समाज व्यवस्था, राजनैतिक छल प्रपंच, बर्बरता और मूल्य विममूढत्र मानसिकता के बच मार्ग खोजती हुई अस्मिता की तलाश दिखाई देती है। द्विवेदी जी के उन्यासों में इतिहास की दृष्टि के साथ ही साथ युग विशेष की सांस्कृतिक चेतना का संयोग भी मिलता है। उनमें दर्शन लोकधर्म परंपराओं तथा सांस्कृतिक का रसायन घोलकर उनकी प्राणवता को अक्षुण्ण बनाये रखने का सार्थक प्रयास है। द्विवेदी जी के उपन्यासों के सभी चरित्र चाहे एतिहासिक हो या काल्पनिक युग विशेष की सांस्कृतिक चेतना के ही उद्‌घोषक हैं, जैसे कहा जा सकता है कि उनके उपन्यास बाणभट्‌ट की आत्मकथाएं ` हर्षयुगीन संस्कृति, चारूचन्द्रलेख में मध्यकालीन संस्कृति, पुनर्नवाए में चौथी शताब्दी की संस्कृतिक और अनामदास का पोथाएं से उपनिषद कालन संस्कृति का पूर्ण परिपाक हुआ है। यहां पर सांस्कृतिक चेतना पर दृष्टिपात करें तरे कह सकते हैं कि बाणभटट की आत्मकथाएं के बाणभट्‌ट निपुणिका और भटिटनी आदि पात्र महिमा मण्डित ह ोते हुए भी सामान्य मनुष्य देवता के कोटी के देवता नहीं। चारू चन्द्रलेख का सातवाहन नायक है वह उज्जयिनी का राजा होते हुए भी ज्ञान का प्रतीक है, रानी चन्द्रलेखा इच्छा शक्ति और मैना क्रिया शक्ति का प्रतीक है। इन सभी चरित्रों का निर्माण मानवीय धरातल पर ही हुआ हे और ये मानवहितों के लिए संघर्षरत रहते हुए सभ्यता और संस्कृति के पथ पर सतत अग्रसित रहते हैं। पुनर्नवाए में भी कथानक का जाल प्राचीन इतिहास होते हुए भी इनके चरित्र सभी मानवीय अधिक है, देबरात, गणिका, मृणाल, मंजुला आर्य चारूदत आदि पत्र चिंतनशल एवं मानवय हैं, वे मनुष्य के अंतरतम को उदघाटित करने के लिए प्रयत्नशील है। इसी प्रकार अनामदास का पौधाएं के प्रधान चरित्र के ज्वाला आदि पड़ित मानव को सुख शांति प्रदान करने के प्रयास में लगे दार्शनिक गुत्थियों के जूझते मूल्यों की या सत्यों की व्याख्या करते हैं, अर्थात मानवय जिजविषा और संभावनाओं को उजागर करने वाले इसके पात्र हैं। उपन्यासकार भटिटनी के माध्यम से कहें तो जाति–पाति के बंधन तथा ऊँच–नीच के नाना स्तरों को चित्रित करते हुए वे लिखते है– एक जाति दूसरी को म्लेच्छ समझती है, एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को नोच सकता है इससे बढ़कर अशांति का कारण और क्या हो सकता है। भट्‌ट वस्तुतः आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के उपन्यास लेखन को मात्र मनोरंजन नहीं समझते हैं। उनके अनुसार आधुनिक युग की अनेक जटिल समस्याओं के समाधान अपने कथानकों की सृष्टि के माध्यम से रूपायित करना ही सच्चे साहित्य की कसौटी है।

निश्कर्षतः कह सकते हैं कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी भारतीय संस्कृति के महान आख्याता है। वे अतीत संस्कृति के ही नहीं, बल्कि साहित्य के भी मर्मज्ञ हैं। साथ–साथ उन्होंने सांस्कृतिक चेतना के साथ भारतीय परंपरा का भी अद्वितीय ज्ञान बतलाया है। आधनिक हिन्दी साहित्य में अपनी भारतीय परंपरा का ऐसा अंतरंग जानकर एवं कलाकार द्विवेदी जी के समान दूसरा कभी नहीं हुआ या नहीं हो सकता। संक्षिप्त में कहा जाएं तो संस्कृति द्विवेदी जी के भ्यतबए और वहां की चीज नहीं, बल्कि अब और फिलहाल यहां का ज्वलंत तजुर्बा है। इस प्रकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ज ने अपन कलम के माध्यम से हिन्द साहित्य में विशिष्ट योगदान देकर भारतीय सांस्कृतिक चेतना को बरकरार रखने का सफल प्रयास किया है

सन्दर्भ सूची–

1 दृष्टव्य– सुमन (सजाहिक स्वतंत्र भारत) क मई पृ.
2 दृष्टव्य– हिन्द सहित्य कोष (भाग) सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा पृं.
3 दृष्टव्य– गुरूदेव श्री रत्नमुनी स्मृति ग्रंथ में संस्कृति का स्वरूप (लेख) पृ.
4 दृष्टव्य– विचार और विर्तक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ.
5 दृष्टव्य– साहित्य का मर्म आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ.
6 दृश्टव्य– विचार और वितर्क आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेद पृ.
7 दृष्टव्य–कल्वलता आचार्य ह. प्रसाद द्विवेदीः आम फिर बौंरा गये शीर्षक निबंध
8 दृष्टव्य– कल्वलता आचार्य ह.प्रसाद द्विवेदी (भगवान महाकाल का कुंठ नृत्य निबंध से)।
9 दृष्टव्य– कल्वलताः आ. हजारी प्र. द्विवेदी, सांस्कृतियां का संगम निबंध से।
10 दृष्टव्य– अशोक के फूल' आ.हजारी प्र. द्विवेदी पृ.
11 दृष्टव्य– आलोचनाः सं. डॉ. नामवरसिंह, अप्रैल/जून पृ.

12 दृष्टव्य– हिन्दी साहित्य की भूमिका पृ.
13 दृष्टव्य– सहित्य सहचर आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ.

14 दृष्टव्य–उपन्यासकार हजारी प्रसाद द्विवेदीः सं. डॉ. बादल सिंह रावत और डॉ. अमिताभ पृ.
15 दृष्टव्य– मधुमती (मई) पृ.
16 दृष्टव्य– अनामदास का पोथाः आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।
17 दृष्टव्य–बाणभटट की आत्मकथाः आ. हजारीप्रसाद द्विवेद प